प्रश्न:- केशवदास पर टिप्पणी लिखें? या जीवनवृत्त बतायें?

उत्तर:- सूर-सूर तुलसी ससी उडुगन केशवदास' इस प्रसिद्ध उक्ति से स्पष्ट है कि केशव हिन्दी के भक्ति-कालीन श्रेष्ठ कवि तुलसी और सूर के बाद हिन्दी-साहित्य में अद्वितीय स्थान के अधिकारी हैं। काशीनाथ के पुत्र केशवदास सनाढ्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। इनका जन्म संवत 1612 और मृत्यु सं० 1674 के आस-पास हुई। ये ओरछा नरेश इन्द्रजीत के दरबार में रहते थे। इन्द्रजीत इन्हें अपना गुरु मानते और इनका बड़ा सम्मान करते थे। केशवदास संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनका यह संस्कृत-ज्ञान उनके कवित्व और आचार्यत्व को पर्याप्त प्रभावित किए हुए है।

रचनाएँ:

केशव के सात ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं- 'विज्ञानगीता', 'जहाँगीरजस-चन्द्रिका', 'वीरसिंहदेव-चरित', 'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया' और 'रामचन्द्रिका'। केशव की इन रचनाओं में चारणकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल के आदर्शों का समन्वय प्राप्त होता है। 'वीरसिंहदेव-चरित' तथा 'जहाँगीरजस-चन्द्रिका' में वीरगाथाकालीन आदर्श है, तो 'रामचन्द्रिका' रामकाव्य परम्परा के अन्तर्गत उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। 'कविप्रिया' तथा 'रसिकप्रिया' में रीतिकाव्य के आदर्श हैं। इस प्रकार केशव की रचनाओं का महत्व बहुमुखी है।

केशव की उपरोक्त रचनाओं में तीन रचनाएँ 'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया' तथा 'रामचन्द्रिका' अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। 'रसिकप्रिया' और 'कविप्रिया' काव्यशास्त्र की पुस्तकें हैं। 'कविप्रिया' में अलंकारों का और 'रसिकप्रिया' में रस का

विवेचन है। अपने काव्यांग-निरूपण में केशव ने अलंकारों को ही प्रधानता दी है, संस्कृत के उन्हीं आचार्यों का अनुसरण केशव ने किया है, जो अलंकारवादी थे। इसलिए केशव के आदर्श भामह, उद्भट और दण्डी आदि आचार्य ही बन सके हैं, केशव इस प्रकार अलंकारवादी ठहरते हैं, उन्होंने स्वयं कहा है।

"जदपि सुजाति सुलक्षनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषन बिनु न बिराजई कविता बनिता मित्त।"

'रामचन्द्रिका'—

केशव की कीर्ति का आधार उनकी 'रामचन्द्रिका' है, यह केशव की प्रबन्ध काव्य रचना है और इसकी गणना हिन्दी के महाकाव्यों में की जाती है, कवि ने वाल्मीकि रामायण को इस रचना का आधार बनाया है, इसके अतिरिक्त कवि पर 'हनुमन्नाटक' और 'प्रसन्नराघव' का भी प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है, 'रामचन्द्रिका' आधुनिक समालोचकों के वाद-विवाद का अखाड़ा बन चुकी है, कुछ समालोचक इसे सफल महाकाव्य मानते हैं और दूसरे इसे साधारण रचना स्वीकारते हैं, प्रबन्ध रचना में 'सम्बन्ध-निर्वाह', 'मर्मस्पर्शी स्थलों का चित्रण' एवं 'दृश्य-चित्रण की विशिष्टता' के गुण होते हैं, इस दृष्टि से 'रामचन्द्रिका' में कथा का विस्तार अनियमित है, तथा कथा प्रवाह-स्थान-स्थान पर खण्डित प्रतीत होता है, परन्तु युद्ध वर्णन के प्रसंग अत्यन्त सुन्दर बन पड़े हैं, मर्मस्पर्शी स्थलों का भी 'रामचन्द्रिका' में अभाव ही दीखता है, रामवनवास जैसे कारुणिक प्रसंग को कवि

दो-तीन छन्दों में इतनी शीघ्रता से कहता है जैसे कि इस घटना का विशेष महत्व ही न हो, 'रामभरत-मिलाप' प्रसंग में भी केशव की सहृदयता नहीं दीखती। यही कारण है कि केशव की प्रबन्ध-रचना में काव्योत्कर्ष नहीं है, प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण में भी केशव ने रोचकता नहीं दिखाई। प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन में उसका मन रमा ही नहीं है

केशव के इस प्रबन्ध-काव्य में घटना-व्यापारों का इतना उत्कर्ष नहीं जितना कि उसके संवादों का है, 'रामचन्द्रिका' जैसे संवाद हिन्दी में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं होते। केशव के सबसे सुन्दर संवाद हैं — परशुराम-प्रसंग, रावण-अंगद संवाद तथा लवकुश प्रसंग के संवाद। ये संवाद अत्यन्त सजीव, ~~स्वाभिक~~ स्वाभाविक और सुन्दर हैं, इनकी भाषा प्रवाहमयी है, अलंकार, छन्द और भाषा की दृष्टि से यह एक प्रौढ़ रचना है, ~~वस्तुतः केशव की रामचन्द्रिका~~

<u>अभ्यासार्थ प्रश्न</u>

प्रश्न — केशव के जीवन वृत्त तथा उनकी रचनाओं पर टिप्पणी लिखें?

पता
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C. B.R.A.B.U.M)
मो०न०- 7909046087
दिनांक - 02 . 02 . 2022